Downloaded from www.studiestoday.com

आरोह भाग-२, गद्य-भाग

- **प्रश्न-संख्या १०**- गद्य खंड में दिए गए पठित गद्यांश से अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनके लिए निर्धारित अंक (२*४=८) हैं |
- **प्रश्न-संख्या ११**- पाठों की विषयवस्तु से संबंधित पाँच में से चार प्रश्नों के उत्तर देने हैं, जिनके लिए निर्धारित अंक (३*४=१२) हैं|

परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए ध्यान देने योग्य बातें –

1. लेख एवं वर्तनी की शुद्धता तथा वाक्य-गठन पर ध्यान दें |
2. हर पाठ का सार,पृष्ठभूमि,विषयवस्तु तथाकथानक को समझना आवश्यक है | अत:विद्यार्थी हर पाठ का सारांश भलीभाँति याद कर लें |
3. प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें तदनुसार अपेक्षित उत्तर लिखें |
4. उत्तर लिखते समय संबंधित मुख्य बिंदुओं का शीर्षकबनाते हुए उत्तर लिखें, यथा-तीन अंक के प्रश्नों के उत्तर लिखते समय कम से कम तीन मुख्य उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख करते हुए उत्तर स्पष्ट करें |
5. अंक-योजना के अनुसार निर्धारित शब्द-सीमा के अंतर्गत उत्तर लिखें | परीक्षार्थी कई बार एक अंक के प्रश्न का उत्तर बहुत लंबा, कई बार पूरा पृष्ठ लिख देते हैं जो समय और ऊर्जा की बर्बादी है |
6. ध्यान रहे कि अधिक लिखने से अच्छे अंक नहीं आते बल्कि सरल-सुबोध भाषा में लिखे गए सटीक उत्तर, सारगर्भित तथ्य तथा उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किए गए उत्तर प्रभावशाली होते हैं |

पाठ 11 - भक्तिन

लेखिका- महादेवी वर्मा

पाठ का सारांश- भक्तिन जिसका वास्तविक नाम लक्ष्मी था,लेखिका 'महादेवी वर्मा' की सेविका है | बचपन में ही भक्तिन की माँ की मृत्यु हो गयी| सौतेली माँ ने पाँच वर्ष की आयु में विवाह तथा नौ वर्ष की आयु में गौना कर भक्तिन को ससुराल भेज दिया| ससुराल में भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी| सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था| भक्तिन का पति उसे बहुत चाहता था| अपने पति के स्नेह के बल पर भक्तिन ने ससुराल वालों से अलगौझा कर अपना अलग घर बसा लिया और सुख से रहने लगी, पर भक्तिन का दुर्भाग्य, अल्पायु में ही उसके पति की मृत्यु हो गई | ससुराल वाले भक्तिन की दूसरी शादी कर उसे घर से निकालकर उसकी संपत्ति हड़पने की साजिश करने लगे| ऐसी परिस्थिति में भक्तिन ने अपने केश मुंडा लिए और संन्यासिन बन गई | भक्तिन स्वाभिमानी, संघर्षशील, कर्मठ और दृढ संकल्प वाली स्त्री है जो पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-कपट से भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती है।घर गृहस्थी सँभालने के लिए अपनी बड़ी बेटी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

दामाद को बुला लिया पर दुर्भाग्य ने यहाँ भी भक्तिन का पीछा नहीं छोड़ा, अचानक उसके दामाद की भी मृत्यु हो गयी| भक्तिन के जेठ-जिठौत ने साजिश रचकर भक्तिन की विधवा बेटी का विवाह जबरदस्ती अपने तीतरबाज साले से कर दिया| पंचायत द्वारा कराया गया यह संबंध दुखदायी रहा | दोनों माँ-बेटी का मन घर-गृहस्थी से उचट गया, निर्धनता आ गयी, लगान न चुका पाने के कारण जमींदार ने भक्तिन को दिन भर धूप में खड़ा रखा| अपमानित भक्तिन पैसा कमाने के लिए गाँव छोड़कर शहर आ जाती है और महादेवी की सेविका बन जाती है| भक्तिन के मन में महादेवी के प्रति बहुत आदर, समर्पण और अभिभावक के समान अधिकार भाव है| वह छाया के समान महादेवी के साथ रहती है| वह रात-रात भर जागकर चित्रकारी या लेखन जैसे कार्य में व्यस्त अपनी मालकिन की सेवा का अवसर ढूँढ लेती है| महादेवी, भक्तिन को नहीं बदल पायी पर भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया| भक्तिन के हाथ का मोटा-देहाती खाना खाते-खाते महादेवी का स्वाद बदल गया, भक्तिन ने महादेवी को देहात के किस्से-कहानियाँ, किंवदंतियाँ कंठस्थ करा दी| स्वभाव से महाकंजूस होने पर भी भक्तिन, पाई-पाई कर जोडी हुई १०५ रुपयों की राशि को सहर्ष महादेवी को समर्पित कर देती है| जेल के नाम से थर-थर काँपने वाली भक्तिन अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के लिए बड़े लाट साहब तक से लड़ने को भी तैयार हो जाती है| भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

<u>पाठ आधारित प्रश्नोत्तर</u>

नोट- उत्तर में निहित रेखांकित वाक्य, मुख्य संकेत बिंदु हैं |

प्रश्न 1-भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था, वह अपने नाम को क्यों छुपाना चाहती थी?

उत्तर-भक्तिन का <u>वास्तविक नाम लक्ष्मी</u> था, हिन्दुओं के अनुसार<u>लक्ष्मी धन की देवी</u>है। चूँकि भक्तिन गरीब थी| उसके वास्तविक नाम के अर्थ और उसके जीवन के यथार्थ में विरोधाभास है, निर्धन भक्तिन सबको अपना <u>असली नाम लक्ष्मी बताकर उपहास का पात्र नहीं बनना चाहती थी</u> इसलिए वह अपना असली नाम छुपाती थी।

प्रश्न 2- लेखिका ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन क्यों रखा?

उत्तर-<u>घुटा हुआ सिर, गले में कंठी माला</u> और <u>भक्तों की तरह सादगीपूर्ण वेशभूषा</u> देखकर महादेवी वर्मा ने लक्ष्मी का नाम भक्तिन रख दिया | यह नाम उसके व्यक्तित्व से पूर्णत: मेल खाता था |

प्रश्न 3-भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में विभाजित किया गया है?

उत्तर- भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाँटा गया है-

- **पहला परिच्छेद**-भक्तिन का बचपन, माँ की मृत्यु, विमाता के द्वारा भक्तिन का बाल-विवाह करा देना ।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- **द्वितीय परिच्छेद**-भक्तिन का वैवाहिक जीवन, सास तथा जिठानियों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, परिवार से अलगौझा कर लेना ।
- **तृतीय परिच्छेद**- पति की मृत्यु, विधवा के रूप में संघर्षशील जीवन।
- **चतुर्थ परिच्छेद**- महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में ।

प्रश्न 4- भक्तिन पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव का उल्लेख कीजिए |

भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है| लड़कियों को खोटा सिक्का या पराया धन माना जाता है| भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिस कारण उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ती थी| सास और जिठानियाँ आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़के पैदा किए थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पडता था| भक्तिन और उसकी बेटियों को रूखा-सूखा मोटा अनाज खाने को मिलता था जबकि उसकी जिठानियाँ और उनके काले-कलूटे बेटे दूध-मलाई राब-चावल की दावत उड़ाते थे

प्रश्न 5-भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए |

भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारितहै | भक्तिन के जिठौत ने संपत्ति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया| पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया | पंचायत के अंधे कानून से दुष्टों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला |

प्रश्न 6-भक्तिन की पाक-कला के बारे में टिप्पणी कीजिए |

भक्तिन को ठेठ देहाती, सादा भोजन पसंद था | रसोई में वह **पाक छूत** को बहुत महत्त्व देती थी | सुबह-सवेरे नहा-धोकर चौके की सफाई करके वह द्वार पर कोयले की मोटी रेखा खींच देती थी| किसी को रसोईघर में प्रवेश करने नहीं देती थी| उसे अपने बनाए भोजन पर बड़ा अभिमान था| वह अपने बनाए भोजन का तिरस्कार नहीं सह सकती थी |

प्रश्न 7- सिद्ध कीजिए कि भक्तिन तर्क-वितर्क करने में माहिर थी |

भक्तिन तर्कपटु थी | केश मुँडाने से मना किए जाने पर वह शास्त्रों का हवाला देते हुए कहती है 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध' | घर में इधर-उधर रखे गए पैसों को वह चुपचाप उठा कर छुपा लेती है, टोके जानेपर वह वह इसे चोरी नही मानती बल्कि वह इसे अपने घर में पड़े पैसों को सँभालकर रखना कहती है| पढाई-लिखाई से बचने के लिए भी वह अचूक तर्क देती है कि अगर मैं भी पढ़ने लगूँ तो घर का काम कौन देखेगा?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 8-भक्तिन का दुर्भाग्य भी कम हठी नही था, लेखिका ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- भक्तिन का दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोड़ता था-

1- बचपन में ही माँ की मृत्यु।
2- विमाता की उपेक्षा।
3- भक्तिन(लक्ष्मी) का बालविवाह।
4- पिता का निधन।
5- तीन-तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियों के द्वारा भक्तिन की उपेक्षा।
6- पति की असमय मृत्यु।
7- दामाद का निधन और पंचायत के द्वारा निकम्मे तीतरबाज युवक से भक्तिन की विधवा बेटी का जबरन विवाह।
8- लगान न चुका पाने पर जमींदार के द्वारा भक्तिन का अपमान।

प्रश्न 9-भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन पर कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- भक्तिन के साथ रहकर महादेवी की जीवन-शैली सरल हो गयी, वे अपनी सुविधाओं की चाह को छिपाने लगीं और असुविधाओं को सहने लगीं। भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खिलाकर उनका स्वाद बदल दिया। भक्तिन मात्र एक सेविका न होकर महादेवी की अभिभावक और आत्मीय बन गयी।भक्तिन, महादेवी के जीवन पर छा जाने वाली एक ऐसी सेविका है जिसे लेखिका नहीं खोना चाहती।

प्रश्न 10- भक्तिन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- महादेवी वर्मा की सेविका भक्तिन के व्यक्तित्व की विशेषताएं निम्नांकित हैं-

- समर्पित सेविका
- स्वाभिमानी
- तर्कशीला
- परिश्रमी
- संघर्षशील
-

प्रश्न 11-भक्तिन के दुर्गुणों का उल्लेख करें।

उत्तर- गुणों के साथ-साथ भक्तिन के व्यक्तित्व में अनेक दुर्गुण भी निहित है-

1. वह घर में इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है और अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. महादेवी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नही मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क भी करती है।
3. वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल देना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नही बदलती।

प्रश्न 12 निम्नांकित भाषा-प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

- **पहली कन्या के दो और संस्करण कर डाले-** भक्तिन ने अपनी पहली कन्या के बाद उसके जैसी दो और कन्याएँ पैदा कर दी अर्थात भक्तिन के एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा हो गयीं |

- **खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी-** आज भी अशिक्षित ग्रामीण समाज में बेटियों को खोटा सिक्का कहा जाता है। भक्तिन ने एक के बाद एक तीन बेटियाँ पैदा कर दी इसलिए उसे खोटे सिक्के को ढालने वाली मशीन कहा गया।

प्रश्न 13-भक्तिन पाठ में लेखिका ने समाज की किन समस्याओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- भक्तिन पाठ के माध्यम से लेखिका ने भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है-

1. लड़के-लड़कियों में किया जाने वाला भेदभाव
2. विधवाओं की समस्या
3. न्याय के नाम पर पंचायतों के द्वारा स्त्रियों के मानवाधिकार को कुचलना
4. अशिक्षा और अंधविश्वास

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर

परिवार और परिस्थितियों के कारण स्वभाव में जो विषमताएँ उत्पन्न हो गई हैं, उनके भीतर से एक स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है, इसी से उसके संपर्क में आनेवाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं। छात्रावास की बालिकाओं में से कोई अपनी चाय बनवाने के लिए देहली पर बैठी रहती हैं, कोई बाहर खडी मेरे लिए नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। मेरे बाहर निकलते ही सब चिड़ियों के समान उड़ जाती हैं और भीतर आते ही यथास्थान विराजमान हो जाती है। इन्हें आने में रूकावट न हो, संभवतः इसी से भक्तिन अपना दोनों जून का भोजन सवेरे ही बनाकर ऊपर के आले में रख देती है और खाते समय चौके का एक कोना धोकर पाक–छूत के सनातन नियम से समझौता कर लेती है।

मेरे परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है, पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है। इस संबंध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

(क) भक्तिन का स्वभाव परिवार में रहकर कैसा हो गया है ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर-विषम परिस्थितिजन्य उसके उग्र, हठी और दुराग्रही स्वभाव के बावजूद भक्तिन के भीतर स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है। उसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति उसमें जीवन की सहज मार्मिकता ही पाते हैं।

(ख) भक्तिन के पास छात्रावास की छात्राएँ क्यों आती हैं ?

उत्तर- भक्तिन के पास कोई छात्रा अपनी चाय बनवाने आती है और देहली पर बैठी रहती है, कोई महादेवी जी के लिए बने नाश्ते को चखकर उसके स्वाद की विवेचना करती रहती है। महादेवी को देखते ही सब छात्राएँ भाग जाती हैं, उनके जाते ही फिर वापस आ जातीं हैं भक्तिन का सहज-स्नेह पाकर चिड़ियों की तरह चहचहाने लगती हैं |

(ग) छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने क्या उपाय किया ?

उत्तर- छात्राओं के आने में रुकावट न डालने के लिए भक्तिन ने अपने पाक-छूत के नियम से समझौता कर लिया | भक्तिन अपना दोनों वक्त का खाना बनाकर सुबह ही आले में रख देती और खाते समय चौके का एक कोना धोकर वहाँ बैठकर खा लिया करती थी ताकि छात्राएँ बिना रोक-टोक के उसके पास आ सकें।

(घ) साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड है ?

उत्तर-भक्तिन महादेवी के साहित्यिक मित्र के प्रति सद्भाव रखती थी जिसके प्रति महादेवी स्वयं सद्भाव रखती थी | वह सभी से परिचित हैपर उनके प्रति सम्मान की मात्रा महादेवी जी के सम्मान की मात्रा पर निर्भर करती है। वह एक अद्भुत ढंग से जान लेती थी कि कौन कितना सम्मान करता है । उसी अनुपात में उसका प्राप्य उसे देती थी।

12 बाजार-दर्शन

लेखक- जैनेंद्र कुमार

पाठ का सारांश बाजार-दर्शन पाठ में बाजारवाद और उपभोक्तावाद के साथ-साथ अर्थनीति एवं दर्शन से संबंधित प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया गया है। बाजार का जादू तभी असर करता है जब मन खाली हो| बाजार के जादू को रोकने का उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली ना हो, मन में लक्ष्य भरा हो| बाजार की असली कृतार्थता है जरूरत के वक्त काम आना| बाजार को वही मनुष्य लाभ दे सकता है जो वास्तव में अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदना चाहता है| जो लोग अपने पैसों के घमंड में अपनी पर्चेजिंग पावर को दिखाने के लिए चीजें खरीदते हैं वे बाजार को शैतानी व्यंग्य शक्ति देते हैं| ऐसे लोग बाजारूपन और कपट बढाते हैं | पैसे की यह व्यंग्य शक्ति व्यक्ति को अपने सगे लोगों के प्रति भी कृतघ्न बना सकती है | साधारण जन का हृदय लालसा, ईर्ष्या और तृष्णा से जलने लगता है | दूसरी ओर ऐसा व्यक्ति जिसके मन में लेश मात्र भी लोभ और तृष्णा नहीं है, संचय की इच्छा नहीं है वह इस व्यंग्य-शक्ति से

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बचा रहता है | भगतजी ऐसे ही आत्मबल के धनी आदर्श ग्राहक और बेचक हैं जिन पर पैसे की व्यंग्य-शक्ति का कोई असर नहीं होता | अनेक उदाहरणों के द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि एक ओर बाजार, लालची, असंतोषी और खोखले मन वाले व्यक्तियों को लूटने के लिए है वहीं दूसरी ओर संतोषी मन वालों के लिए बाजार की चमक-दमक, उसका आकर्षण कोई महत्त्व नहीं रखता।

प्रश्न१ - पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है, बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है <u>खरीदने की शक्ति</u>। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए <u>आवश्यकता से अधिक खरीदारी</u>करता है और बाजार को शैतानी व्यंग्य-शक्ति देता है। ऐसे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

प्रश्न२ -लेखक ने बाजार का जादू किसे कहा है, इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- बाजार की <u>चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण</u> को बाजार का जादू कहा गया है, यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी <u>खरीदने को विवश</u> हो जाते हैं।

प्रश्न३ -आशय स्पष्ट करें।

- मन खाली होना
- मन भरा होना
- मन बंद होना

उत्तर-<u>मन खाली होना</u>- मन में कोई निश्चित वस्तु खरीदने का लक्ष्य न होना। निरुद्देश्य बाजार जाना और व्यर्थ की चीजों को खरीदकर लाना।

<u>मन भरा होना-</u> मन लक्ष्य से भरा होना। जिसका मन भरा हो वह भलीभाँति जानता है कि उसे बाजार से कौन सी वस्तु खरीदनी है, अपनी आवश्यकता की चीज खरीदकर वह बाजार को सार्थकता प्रदान करता है।

<u>मन बंद होना-</u>मन में किसी भी प्रकार की इच्छा न होना अर्थात अपने मन को शून्य कर देना।

प्रश्न४ - 'जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' यहां किस बल की चर्चा की गयी है?

उत्तर- लेखक ने संतोषी स्वभाव के व्यक्ति के <u>आत्मबल</u>की चर्चा की है। दूसरे शब्दों में यदि मन में संतोष हो तो व्यक्ति दिखावे और ईर्ष्या की भावना से दूर रहता है उसमें संचय करने की प्रवृत्ति नहीं होती।

प्रश्न५ - अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र कब बन जाता है?

उत्तर- जब बाजार में <u>कपट और शोषण</u> बढ़ने लगे, खरीददार अपनी पर्चेचिंग पावर के घमंड में <u>दिखावे के लिए खरीददारी</u> करें | मनुष्यों में परस्पर <u>भाईचारा समाप्त</u> हो जाए| खरीददार और दुकानदार <u>एक दूसरे को</u>

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

ठगने की घात में लगे रहें , एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तो बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

प्रश्न६-भगतजी बाजार और समाज को किस प्रकार सार्थकता प्रदान कर रहे हैं?

उत्तर- भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

प्रश्न ७ _ भगत जी के व्यक्तित्व के सशक्त पहलुओं का उल्लेख कीजिए |

उत्तर-निम्नांकित बिंदु उनके व्यक्तित्व के सशक्त पहलू को उजागर करते हैं।

- पंसारी की दुकान से केवल अपनी जरूरत का सामान (जीरा और नमक) खरीदना।
- निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलना।
- छह आने की कमाई होते ही चूरन बेचना बंद कर देना।
- बचे हुए चूरन को बच्चों को मुफ़्त बाँट देना।
- सभी काजय-जय राम कहकर स्वागत करना।
- बाजार की चमक-दमक से आकर्षित न होना।
- समाज को संतोषी जीवन की शिक्षा देना।

प्रश्न7-बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण-संबंधित प्रश्नोत्तर

बाजार मे एक जादू है। वह जादू आँख की तरह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी-चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर सेंक

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मिल जाता है पर इससे अभिमान को गिल्टी की खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ देगी ?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा उपाय है वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो तब बाजार न जाओ कहते हैं, लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार फैला का फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना।

प्रश्न-1 बाजार के जादू को लेखक ने कैसे स्पष्ट किया है ?

उत्तर- बाजार के रूप का जादू आँखों की राह से काम करता हुआ हमें आकर्षित करता है। बाजार का जादू ऐसे चलता है जैसे लोहे के ऊपर चुंबक का जादू चलता है। चमचमाती रोशनी में सजी फैंसी चीजें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं| इसी चुम्बकीय शक्ति के कारण व्यक्ति फिजूल सामान को भी खरीद लेता है |

प्रश्न-2 जेब भरी हो और मन खाली तो हमारी क्या दशा होती है ?

उत्तर- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार का जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुँच जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

प्रश्न-3 फैंसी चीजों की बहुतायत का क्या परिणाम होता है?

उत्तर- फैंसी चीजें आराम की जगह आराम में व्यवधान ही डालती है। थोड़ी देर को अभिमान को जरूर सेंक मिल जाती है पर दिखावे की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।

प्रश्न-4 जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर- जादू की जकड़ से बचने के लिए एक ही उपाय है, वह यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो, मन खाली हो तो बाजार मत जाओ।

13 काले मेघा पानी दे

लेखक-धर्मवीर भारती

पाठ का सारांश -'काले मेघा पानी दे' निबंध, लोकजीवन के विश्वास और विज्ञान के तर्क पर आधारित है। जब भीषण गर्मी के कारण व्याकुल लोग वर्षा कराने के लिए पूजा-पाठ और कथा-विधान कर थक–हार जाते हैं तब वर्षा कराने के लिए अंतिम उपाय के रूप में इन्दर सेना निकलती है| इन्दर सेना, नंग-धड़ंग बच्चों की टोली है जो कीचड़ में लथपथ होकर गली-मोहल्ले में पानी माँगने निकलती है| लोग अपने घर की छतों-खिड़कियों से इन्दर सेना पर पानी डालते हैं | लोगों की मान्यता है कि इन्द्र, बादलों के स्वामी और

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

वर्षा के देवता हैं| इन्द्र की सेना पर पानी डालने से इन्द्र भगवान प्रसन्न होकर पानी बरसाएंगे | लेखक का तर्क है कि जब पानी की इतनी कमी है तो लोग मुश्किल से जमा किए पानी को बाल्टी भर-भरकर इन्दर सेना पर डालकर पानी को क्यों बर्बाद करते है? आर्यसमाजी विचारधारा वाला लेखक इसे अंधविश्वास मानता है | इसके विपरीत लेखक की जीजी उसे समझाती है कि यह पानी की बर्बादी नहीं बल्कि पानी की बुवाई है | कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है | त्याग के बिना दान नहीं होता| प्रस्तुत निबंध में लेखक ने भ्रष्टाचार की समस्या को उठाते हुए कहा है कि जीवन में कुछ पाने के लिए त्याग आवश्यक है। जो लोग त्याग और दान की महत्ता को नहीं मानते, वे ही भ्रष्टाचार में लिप्त रहकर देश और समाज को लूटते हैं| जीजी की आस्था, भावनात्मक सच्चाई को पुष्ट करती है और तर्क केवल वैज्ञानिक तथ्य को सत्य मानता है। जहाँ तर्क, यथार्थ के कठोर धरातल पर सच्चाई को परखता है तो वहीं आस्था, अनहोनी बात को भी स्वीकार कर मन को संस्कारित करती है। भारत की स्वतंत्रता के ५० साल बाद भी देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और स्वार्थ की भावना को देखकर लेखक दुखी है | सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँच पा रहीं हैं? काले मेघा के दल उमड़ रहे हैं पर आज भी गरीब की गगरी फूटी हुई क्यों है ? लेखक ने यह प्रश्न पाठकों के लिए छोड़ दिया है |

प्रश्न1-इन्दर सेना घर-घर जाकर पानी क्यों माँगती थी?

उत्तर- गाँव के लोग <u>बारिश के लिए</u> भगवान इंद्र से प्रार्थना किया करते थे। जब पूजा-पाठ,व्रत आदि उपाय असफ़ल हो जाते थे तो भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे।

प्रश्न2-इन्दरसेना को लेखक मेढक-मंडली क्यों कहता है, जीजी के बार–बार कहने पर भी वह इन्दरसेना पर पानी फेंकने को राजी क्यों नहीं होता ?

उत्तर- इन्दरसेना का कार्य आर्यसमाजी विचारधारा वाले लेखक को <u>अंधविश्वास</u> लगता है, उसका मानना है कि यदि इंदरसेना देवता से पानी दिलवा सकती है तो स्वयं अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती? पानी की कमी होने पर भी लोग घर में एकत्र किये हुए पानी को इंदरसेना पर फ़ेंकते हैं। लेखक इसे <u>पानी की निर्मम बरबादी</u> मानता है।

प्रश्न3- रूठे हुए लेखक को जीजी ने किस प्रकार समझाया?

उत्तर- जीजी ने लेखक को प्यार से लड्डू-मठरी खिलाते हुए निम्न तर्क दिए-

1- **त्याग का महत्त्व**- कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है।
2- **दान की महत्ता**- ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। जो चीज अपने पास भी कम हो और अपनी आवश्यकता को भूलकर वह चीज दूसरों को दान कर देना ही त्याग है |
3- **इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना**- इंदरसेना पर पानी फ़ेंकना पानी की बरबादी नहीं बल्कि इंद्रदेव को जल का अर्ध्य चढ़ाना है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4- **पानी की बुवाई करना**- जिस प्रकार किसान फ़सल उगाने के लिए जमीन पर बीज डालकर बुवाई करता है वैसे ही पानी वाले बादलों की फ़सल पाने के लिए इन्दर सेना पर पानी डाल कर पानी की बुवाई की जाती है।

प्रश्न4-नदियों का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

उत्तर- गंगा भारतीय समाज में सबसे पूज्य सदानीरा नदी है। जिसका भारतीय इतिहास में धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व है | वह भारतीयों के लिए केवल एक नदी नहीं अपितु माँ है, स्वर्ग की सीढ़ी है, मोक्षदायिनी है। उसमें पानी नहीं अपितु अमृत तुल्य जल बहता है। भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं| बड़े-बड़े नगर, तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश मेंभारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं, हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही भारत भूमि हरी-भरी है । नदियों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते, यही कारण है कि हम भारतीय नदियों की पूजा करते हैं |

प्रश्न4-आजादी के पचास वर्षों के बाद भी लेखक क्यों दुखी है, उसके मन में कौन से प्रश्न उठ रहे हैं?

उत्तर- आजादी के पचास वर्षों बाद भी भारतीयों की सोच में सकारात्मक बदलाव न देखकर लेखक दुखी है। उसके मन में कई प्रश्न उठ रहे हैं-

1. क्या हम सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र हैं?
2. क्या हम अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को समझ पाए हैं?
3. राष्ट्र निर्माण में हम पीछे क्यों हैं, हम देश के लिए क्या कर रहे हैं?
4. हम स्वार्थ और भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हैं, त्याग में विश्वास क्यों नहीं करते ?
5. सरकार द्वारा चलाई जा रही सुधारवादी योजनाएँ गरीबों तक क्यों नहीं पहुँचती है?

गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण-संबंधित प्रश्नोत्तर

सचमुच ऐसे दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ का पहला पखवाड़ा बीत चुका होता पर क्षितिज पर कहीं बादलों की रेख भी नहीं दीखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को, वो भी खौलता हुआ पानी हो | शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब थी| जहाँ जुताई होनी चाहिए थी वहाँ खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर हो जाती फिर उसमें पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी गिर पड़े | ढोर-डंगर प्यास के मारे मरने लगते लेकिन बारिश का कहीं नाम निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इन्दर सेना |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न१- वर्षा न होने पर लोगों की क्या स्थिति हो गयी थी ?

उत्तर - वर्षा न होने पर गरमी के कारण लोग लू लगने से बेहोश होने लगे | गाँव-शहर सभी जगह पानी का अभाव हो गया| कुएँ सूख गए, खेतों की मिट्टी सूखकर पत्थर के समान कठोर होकर फट गयी| घरों में नलों में पानी बहुत कम आता था | पशु प्यास के मारे मरने लगे थे |

प्रश्न२- वर्षा के देवता कौन हैं उनको प्रसन्न करने के लिए क्या उपाय किए जाते थे ?

उत्तर -वर्षा के देवता भगवान इन्द्र हैं| उनको प्रसन्न करने के लिए पूजा–पाठ, कथा-विधान कराए जाते थे | ताकि इन्द्र देव प्रसन्न होकर बादलों की सेना भेजकर झमाझम बारिश कराएँ और लोगों के कष्ट दूर हों |

प्रश्न३- वर्षा कराने के अंतिम उपाय के रूप में क्या किया जाता था?

उत्तर –जब पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग हार जाते थे तब अंतिम उपाय के रूप में इन्दर सेना आती थी | नंग-धडंग, कीचड़ में लथपथ, '**काले मेघा पानी दे पानी दे गुड़धानी दे**' की टेर लगाकर प्यास से सूखते गलों और सूखते खेतों के लिए मेघों को पुकारती हुई टोली बनाकर निकल पड़ती थी|

प्रश्न४-आशय स्पष्ट करें –

जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका होता पर क्षितिज में कहीं बादलों की रेख भी नजर नहीं आती |

आशय- जेठ का महीना है, भीषण गरमी है| तपते हुए दस दिन बीत कर आषाढ का महीना भी आधा बीत गया, पर पानी के लिए तड़पते, वर्षा की आशा में आसमान की ओर ताकते लोगों को कहीं बादल नजर नहीं आ रहे |

14 पहलवान की ढोलक

फ़णीश्वरनाथ रेणु

पाठ का सारांश –आंचलिक कथाकार फ़णीश्वरनाथ रेणु की कहानी पहलवान की ढोलक में कहानी के मुख्य पात्र लुट्टन के माता-पिता का देहांत उसके बचपन में ही हो गया था | अनाथ लुट्टन को उसकी विधवा सास ने पाल-पोसकर बड़ा किया | उसकी सास को गाँव वाले सताते थे | लोगों से बदला लेने के लिए कुश्ती के दाँवपेंच सीखकर कसरत करके लुट्टन पहलवान बन गया |

एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला देखने गया जहाँ ढोल की आवाज और कुश्ती के दाँवपेंच देखकर उसने जोश में आकर नामी पहलवान चाँदसिंह को चुनौती दे दी | ढोल की आवाज से प्रेरणा पाकर लुट्टन ने दाँव लगाकर चाँद सिंह को पटककर हरा दिया और राज पहलवान बन गया | उसकी ख्याति दूर-दूर तक फ़ैल गयी| १५ वर्षों तक पहलवान अजेय बना रहा| उसके दो पुत्र थे| लुट्टन ने दोनों बेटों को भी पहलवानी के गुर

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सिखाए| राजा की मृत्यु के बाद नए राजकुमार ने गद्दी संभाली। राजकुमार को घोड़ों की रेस का शौक था। मैनेजर ने नये राजा को भड़काया, पहलवान और उसके दोनों बेटों के भोजनखर्च को भयानक और फ़िज़ूलखर्च बताया, फ़लस्वरूप नए राजा ने कुश्ती को बंद करवा दिया और पहलवान लुट्टनसिंह को उसके दोनों बेटों के साथ महल से निकाल दिया।

राजदरबार से निकाल दिए जाने के बाद लुट्टन सिंह अपने दोनों बेटों के साथ गाँव में झोपड़ी बनाकर रहने लगा और गाँव के लड़कों को कुश्ती सिखाने लगा| लुट्टन का स्कूल ज्यादा दिन नहीं चला और जीविकोपार्जन के लिए उसके दोनों बेटों को मजदूरी करनी पड़ी| इसी दौरान गाँव में अकाल और महामारी के कारण प्रतिदिन लाशें उठने लगी| पहलवान महामारी से डरे हुए लोगों को ढोलक बजाकर बीमारी से लड़ने की संजीवनी ताकत देता था| एक दिन पहलवान के दोनों बेटे भी महामारी की चपेट में आकर मर गए पर उस रात भी पहलवान ढोलक बजाकर लोगों को हिम्मत बंधा रहा था | इस घटना के चार-पाँच दिन बाद पहलवान की भी मौत हो जाती है|

पहलवान की ढोलक, व्यवस्था के बदलने के साथ लोक कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। इस कहानी में लुट्टन नाम के पहलवान की हिम्मत और जिजीविषा का वर्णन किया गया है। भूख और महामारी, अजेय लुट्टन की पहलवानी को फ़टे ढोल में बदल देते हैं। इस करुण त्रासदी में पहलवान लुट्टन कई सवाल छोड़ जाता है कि कला का कोई स्वतंत्र अस्तित्व है या कला केवल व्यवस्था की मोहताज है?

प्रश्न1- लुट्टन को पहलवान बनने की प्रेरणा कैसे मिली ?

उत्तर- लुट्टन जब नौ साल का था तो उसके माता-पिता का देहांत हो गया था | सौभाग्य से उसकी शादी हो चुकी थी| अनाथ लुट्टन को उसकी विधवा सास ने पाल-पोसकर बड़ा किया | उसकी सास को गाँव वाले परेशान करते थे| लोगों से बदला लेने के लिए उसने पहलवान बनने की ठानी| धारोष्ण दूध पीकर, कसरत कर उसने अपना बदन गठीला और ताकतवर बना लिया | कुश्ती के दाँवपेंच सीखकर लुट्टन पहलवान बन गया |

प्रश्न2- रात के भयानक सन्नाटे में लुट्टन की ढोलक क्या करिश्मा करती थी?

उत्तर- रात के भयानक सन्नाटे मेंलुट्टन की ढोलक महामारी से जूझते लोगों को हिम्मत बँधाती थी | ढोलक की आवाज से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था| महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज, बीमार-मृतप्राय गाँववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न3- लुट्टन ने सर्वाधिक हिम्मत कब दिखाई ?

उत्तर- लुट्टन सिंह ने सर्वाधिक हिम्मत तब दिखाई जब दोनों बेटों की मृत्यु पर वह रोया नहीं बल्कि हिम्मत से काम लेकर अकेले उनका अंतिम संस्कार किया| यही नहीं, जिस दिन पहलवान के दोनों बेटे

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

महामारी की चपेट में आकर मर गए पर उस रात को भी पहलवान ढोलक बजाकर लोगों को हिम्मत बँधा रहा था| श्यामनगर के दंगल में पूरा जनसमुदाय चाँद सिंह के पक्ष में था चाँद सिंह को हराते समय लुट्टन ने हिम्मत दिखाई और बिना हताश हुए दंगल में चाँद सिंह को चित कर दिया |

प्रश्न4- लुट्टन सिंह राज पहलवान कैसे बना?

उत्तर- श्यामनगर के राजा कुश्ती के शौकीन थे। उन्होंने दंगल का आयोजन किया। पहलवान लुट्टन सिंह भी दंगल देखने पहुँचा । चांदसिंह नामक पहलवान जो शेर के बच्चे के नाम से प्रसिद्ध था, कोई भी पहलवान उससे भिड़ने की हिम्मत नहीं करता था। चाँदसिंह अखाड़े में अकेला गरज रहा था। लुट्टन सिंह ने चाँदसिंह को चुनौती दे दी और चाँदसिंह से भिड़ गया।ढ़ोल की आवाज सुनकर लुट्टन की नस-नस में जोश भर गया।उसने चाँदसिंह को चारों खाने चित कर दिया। राजासाहब ने लुट्टन की वीरता से प्रभावित होकर उसे राजपहलवान बना दिया।

प्रश्न5- पहलवान की अंतिम इच्छा क्या थी ?

उत्तर- पहलवान की अंतिम इच्छा थी कि उसे चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह जिंदगी में कभी चित नहीं हुआ था| उसकी दूसरी इच्छा थी कि उसकी चिता को आग देते समय ढोल अवश्य बजाया जाए |

प्रश्न6- ढोल की आवाज और लुट्टन के में दाँवपेंच **संबंध बताइए-**

उत्तर- ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँवपेंच में संबंध -

- चट धा, गिड़ धा→ आजा भिड़ जा |
- चटाक चट धा→ उठाकर पटक दे |
- चट गिड़ धा→मत डरना |
- धाक धिना तिरकट तिना→ दाँव काटो , बाहर हो जाओ |
- धिना धिना, धिक धिना→ चित करो

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण-संबंधित प्रश्नोत्तर

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी | निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को अपने हृदय में ही बल पूर्वक दबाने की चेष्टा कर रही थी | आकाश में तारे चमक रहे थे | पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं| आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर आना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी | अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे | सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज रात की निस्तब्धता को भंग करती थी | गाँव की झोपडियों से कराहने और कै करने की आवाज, हरे राम हे भगवान की टेर सुनाई पड़ती थी| बच्चे भी निर्बल कंठों से माँ – माँ पुकारकर रो पड़ते थे |

(क)अँधेरी रात को आँसू बहाते हुए क्यों दिखाया गया है ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर– गाँव में हैजा और मलेरिया फैला हुआ था | महामारी की चपेट में आकार लोग मर रहे थे |चारों ओर मौत का सनाटा छाया था इसलिए अँधेरी रात भी चुपचाप आँसू बहाती सी प्रतीत हो रही थी|

(ख) तारे के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर– तारे के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि अकाल और महामारी से त्रस्त गाँव वालों की पीड़ा को दूर करने वाला कोई नहीं था | प्रकृति भी गाँव वालों के दुःख से दुखी थी| आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर आना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी |

(ग) रात की निस्तब्धता को कौन भंग करता था ?

उत्तर– सियारों की चीख-पुकार, पेचक की डरावनी आवाजें और कुत्तों का सामूहिक रुदन मिलकर रात के सन्नाटे को भंग करते थे |

(घ) झोपड़ियों से कैसी आवाजें आ रही हैं और क्यों?

उत्तर– झोपड़ियों से रोगियों के कराहने, कै करने और रोने की आवाजें आ रही हैं क्योंकि गाँव के लोग मलेरिया और हैजे से पीड़ित थे | अकाल के कारण अन्न की कमी हो गयी थी| औषधि और पथ्य न मिलने के कारण लोगों की हालत इतनी बुरी थी कि कोई भगवान को पुकार लगाता था तो कोई दुर्बल कंठ से माँ–माँ पुकारता था |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

15 चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

लेखक-विष्णु खरे

पाठ का सारांश –चार्ली चैप्लिन ने हास्य कलाकार के रूप में पूरी दुनिया के बहुत बड़े दर्शक वर्ग को हँसाया है | उनकी फिल्मों ने फिल्म कला को लोकतांत्रिक बनाने के साथ-साथ दशकों की वर्ग और वर्ण-व्यवस्था को भी तोड़ा | चार्ली ने कला में बुद्धि की अपेक्षा भावना को महत्त्व दिया है | बचपन के संघर्षों ने चार्ली के भावी फिल्मों की भूमि तैयार कर दी थी| भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र में करुणा का हास्य में परिवर्तन भारतीय परम्परा में नहीं मिलता लेकिन चार्ली एक ऐसा जादुई व्यक्तित्व है जो हर देश, संस्कृति और सभ्यता को अपना सा लगता हैं| भारतीय जनता ने भी उन्हें सहज भाव से स्वीकार किया है| स्वयं पर हँसना चार्ली ने ही सिखाया| भारतीय सिनेमा जगत के सुप्रसिद्ध कलाकार राजकपूर को चार्ली का भारतीयकरण कहा गया है | चार्ली की अधिकांश फ़िल्में मूक हैं इसलिए उन्हें अधिक मानवीय होना पड़ा | पाठ में हास्य फिल्मों के महान अभिनेता 'चार्ली चैप्लिन' की जादुई विशेषताओं का उल्लेख किया गया है जिसमें उसने करुणा और हास्य में सामंजस्य स्थापित कर फ़िल्मों को सार्वभौमिक रूप प्रदान किया।

प्रश्न१ -चार्ली के जीवन पर प्रभाव डालने वाली मुख्य घटनाएँ कौन सी थी ?

उत्तर- चार्ली के जीवन में दो ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्होंने उनके भावी जीवन पर बहुत प्रभाव डाला |

पहली घटना - जब चार्ली बीमार थे उनकी माँ उन्हें ईसा मसीह की जीवनी पढ़कर सुना रही थी | ईसा के सूली पर चढ़ने के प्रसंग तक आते-आते माँ-बेटा दोनों ही रोने लगे| इस घटना ने चार्ली को स्नेह, करुणा और मानवता जैसे उच्च जीवन मूल्य दिए |

दूसरी घटना है– बालक चार्ली कसाईखाने के पास रहता था| वहाँ सैकड़ों जानवरों को रोज मारा जाता था| एक दिन एक भेड़ वहाँ से भाग निकली| भेड़ को पकड़ने की कोशिश में कसाई कई बार फिसला| जिसे देखकर लोग हंसने लगे, ठहाके लगाने लगे| जब भेड़ को कसाई ने पकड़ लिया तो बालक चार्ली रोने लगा| इस घटना ने उसके भावी फिल्मों में त्रासदी और हास्योत्पादक तत्वों की भूमिका तय कर दी |

प्रश्न२ – **आशय स्पष्ट कीजिए**–

चैप्लिन ने सिर्फ फिल्मकला को ही लोकतांत्रिक नही बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को भी तोड़ा|

उत्तर- लोकतांत्रिक बनाने का अर्थ है कि फिल्म कला को सभी के लिए लोकप्रिय बनाना और वर्ग और वर्ण-व्यवस्था को तोड़ने का आशय है- समाज में प्रचलित अमीर-गरीब, वर्ण, जातिधर्म के भेदभाव को समाप्त करना |चैप्लिन का चमत्कार यह है कि उन्होंने फिल्मकला को बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों तक पहुँचाया| उनकी फिल्मों ने समय भूगोल और संस्कृतियों की सीमाओं को लाँघ कर सार्वभौमिक

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

लोकप्रियता हासिल की | चार्ली ने यह सिद्ध कर दिया कि कला स्वतन्त्र होती है, अपने सिद्धांत स्वयं बनाती है |

प्रश्न३– चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में निहित त्रासदी/करुणा/हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की परिधि में क्यों नहीं आता?

उत्तर- चार्ली चैप्लिन की फिल्मों में निहित त्रासदी/करुणा/हास्य का सामंजस्य भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र की परिधि में नहीं आताक्योंकि भारतीय रस-सिद्धांत में करुणा और हास्य का मेल नहीं दिखाया जाता क्योंकि भारतीय सौंदर्यशास्त्र में करुणरस और हास्य रस को परस्पर विरोधी माना गया है अर्थात जहां करुणा है वहाँ हास्य नहीं हो सकता। भारत में स्वयं पर हँसने की परंपरा नहीं है परंतु चार्ली के पात्र अपने पर हँसते–हँसाते हैं। चार्ली की फ़िल्मों के दृश्य हँसाते-हँसाते रुला देते हैं तो कभी करुण दृश्य के बाद अचानक ही हँसने पर मजबूर कर देते हैं।

प्रश्न४– चार्ली के फिल्मों की विशेषताएँ बताइए |

उत्तर- चार्ली की फ़िल्मों में हास्य और करुणा का अद्भुत सामंजस्य है। उनकी फ़िल्मों में भाषा का प्रयोग बहुत कम है। चार्ली की फ़िल्मों में बुद्धि की अपेक्षा भावना का महत्त्व अधिक है। उनकी फ़िल्मों में सार्वभौमिकता है। चार्ली किसी भी संस्कृति को विदेशी नही लगते। चार्ली सबको अपने लगते है। चार्ली ने फ़िल्मों को लोकतांत्रिक बनाया और फ़िल्मों में वर्ग तथावर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। अपनी फिल्मों में चार्ली सदैव चिर युवा दिखता है।

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण-संबंधी प्रश्नोत्तर

गद्यांश संकेत –चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पृष्ठ १२०)

यदि यह वर्ष चैप्लिन की ....काफी कुछ कहा जाएगा |

प्रश्न (क)-विकासशील देशों में चैप्लिन क्यों मशहूर हो रहे हैं?

उत्तर - विकासशील देशों में जैसे-जैसे टेलीविजन और वीडियो का प्रसार हो रहा है, लोगों को उनकी फिल्मों को देखने का अवसर मिल रहा है |एक बहुत बड़ा वर्ग नए सिरे से चार्ली को घड़ी सुधारते और जूते खाने की कोशिश करते देख रहा है, इसीलिए चार्ली विकासशील देशों में लोकप्रिय हो रहे हैं |

(ख)- पश्चिम में चार्ली का पुनर्जीवन कैसे होता रहता है ?

उत्तर - पश्चिम में चार्ली की फिल्मों का प्रदर्शन होता रहता है| उनकी कला से प्रेरणा पाकर हास्य फ़िल्में बनती रहती हैं | उनके द्वारा निभाए किरदारों की नकल, अन्य कलाकार करते हैं | पश्चिम में चार्ली का पुनर्जीवन होता रहता है|

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(ग)- चार्ली को लोग बुढ़ापे तक क्यों याद रखेंगे ?

उत्तर –हास्य कलाकार के रूप में लोग चार्ली को बुढ़ापे तक याद रखेंगे क्योंकि उनकी कला समय, भूगोल और संस्कृतियों की सीमाओं को लाँघकर लाखों लोगों को हँसा रही है|

(घ)- चार्ली की फिल्मों के बारे में काफी कुछ कहा जाना क्यों बाक़ी है ?

उत्तर –चैप्लिन की ऐसी कुछ फ़िल्में या इस्तेमाल न की गयी रीलें मिली हैं जिनके बारे में कोई नहीं जानता था | चार्ली की भावनाप्रधान हास्य फिल्मों ने कला के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं अत: चार्ली की फिल्मों के बारे में अभी काफी कुछ कहा जाना बाक़ी है|

16 नमक

लेखिका - रजिया सज्जाद जहीर

सारांश -‘नमक’भारत-पाक विभाजन पर लिखित मार्मिक कहानी है | विस्थापित हुए लोगों में अपने–अपने जन्म स्थानों के प्रति आज भी लगाव है| धार्मिक आधार पर बनी राष्ट्र-राज्यों की सीमा-रेखाएँ उनके अंतर्मन को अलग नहीं कर पाई हैं | भारत में रहने वाली सिख बीवी लाहौर को अपना वतन मानती है और भारतीय कस्टम अधिकारी, ढाका के नारियल पानी को यादकर उसे सर्वश्रेष्ठ बताता है। दोनो देशों के नागरिकों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद आज भी कायम है इसीलिए सफ़िया भारत में रहने वाली अपनी मुँहबोली माँ, सिख बीवी के लिए लाहौरी नमक लाने के लिए कस्टम और कानून की परवाह नहीं करती।

प्रश्न1- ‘नमक’ पाठ के आधार पर बताइए कि सफिया और उसके भाई के विचारों में क्या अंतर था?

उत्तर- १-सफिया भावनाओं को बहुतमहत्त्व देती है पर उसका भाई बौद्धिक प्रवृत्ति का है, उसकी दृष्टि में कानून भावनाओं से ऊपर है|

२-सफिया मानवीय संबंधों को बहुत महत्त्व देती है जबकि उसका भाई अलगाववादी विचारधारा का है, हिस्से-बखरे की बात करता है |

३-सफिया का भाई कहता है कि अदीबों(साहित्यकार) का दिमाग घूमा हुआ होता है जबकि सफिया जो स्वयं अदीब है उसका मानना है कि अगर सभी लोगों का दिमाग अदीबों की तरह घूमा हुआ होता तो दुनिया कुछ बेहतर हो जाती |

प्रश्न२- नमक ले जाते समय सफ़िया के मन में क्या दुविधा थी ?

उत्तर-सफिया सैयद मुसलमान थी जो हर हाल में अपना वायदा निभाते हैं| पाकिस्तान से लाहौरी नमक ले जाकर वह अपना वायदा पूरा करना चाहती थी परन्तु जब उसे पता चला कि कस्टम के नियमों के अनुसार

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सीमापार नमक ले जाना वर्जित है तो वह दुविधा में पड़ गई | सफ़िया का द्वंद्व यह था कि वह अपनी सिख माँ के लिए नमक, कस्टम अधिकारियों को बताकरले जाए या छिपाकर|

प्रश्न३- पाठ के आधार पर सफिया की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए |

उत्तर संकेत –

१- भावुक
२- ईमानदार
३- दृढ़निश्चयी
४- निडर
५- वायदे को निभाने वाली
६- मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि मानने वाली साहित्यकार

प्रश्न ४- **'नमक' पाठ में आए किरदारों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि आज भी भारत और पाकिस्तान की जनता के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है |**

उत्तर – भले ही राजनीतिक और धार्मिक आधार पर भारत और पाकिस्तान को भौगोलिक रूप से विभाजित कर दिया गया है लेकिन दोनों देशों के लोगों के हृदय में आज भी पारस्परिक भाईचारा, सौहार्द्र, स्नेह और सहानुभूति विद्यमान है | राजनीतिक तौर पर भले ही संबंध तनावपूर्ण हों पर सामाजिक तौर पर आज भी जनता के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है | अमृतसर में रहने वाली सिख बीबी लाहौर को अपना वतन कहती है और लाहौरी नमक का स्वाद नहीं भुला पाती | पाकिस्तान का कस्टम अधिकारी नमक की पुड़िया सफिया को वापस देते हुए कहता है "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहना |" भारतीय सीमा पर तैनात कस्टम अधिकारी ढाका की जमीन को और वहाँ के पानी के स्वाद को नहीं भूल पाता |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर

गद्यांश संकेत- पाठ– नमक (पृष्ठ १३४)

सफिया कस्टम के जंगले से ....दोनों के हाथों में थी |

(क)सफिया कस्टम के जँगले से निकलकर दूसरे प्लेटफार्म पर आ गयी वे वहीं खड़े रहे– इस वाक्य में 'वे' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

उत्तर- यहाँ 'वे' शब्द का प्रयोग पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी के लिए किया गया है जो विभाजन से पूर्व दिल्ली में रहते थे और आज भी दिल्ली को ही अपना वतन मानते हैं |

(ख) प्लेटफार्म पर सफिया को विदा करने कौन-कौन आए थे, उन्होंने सफिया को कैसे विदाई दी ?

उत्तर- प्लेटफार्म पर सफिया को विदा करने उसके बहुत सारे मित्र, सगे संबंधी और भाई आए थे| उन्होंने ठंडी साँस भरते हुए, भिंचे हुए होंठों के साथ, आँसू बहाते हुए सफिया को विदाई दी |

(ग) अटारी में रेलगाड़ी में क्या परिवर्तन हुए ?

उत्तर- अटारी में रेलगाड़ी से पाकिस्तानी पुलिस उतरी और हिन्दुस्तानी पुलिस सवार हो गई|

(घ) कौन सी बात सफिया की समझ में नहीं आ रही थी ?

उत्तर- दोनों ओर एक सी जमीन, एक जैसा आसमान, एक सी भाषा, एक सा पहनावा और एक सी सूरत के लोग फिर भी दोनों के हाथों में भरी हुई बंदूकें हैं |

17 शिरीष के फूल

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

सारांश –'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' शिरीष को अद्भुत अवधूत मानते हैं, क्योंकि संन्यासी की भाँति वह सुख-दुख की चिंता नहीं करता। गर्मी, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है। शिरीष के फूल के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा, धैर्यशीलता और कर्तव्यनिष्ठ बने रहने के मानवीय मूल्यों को स्थापित किया गया है।लेखक ने शिरीष के कोमल फूलों और कठोर फलों के द्वारा स्पष्ट किया है कि हृदय की कोमलता बचाने के लिए कभी-कभी व्यवहार की कठोरता भी आवश्यक हो जाती है| महान कवि कालिदास और कबीर भी शिरीष की तरह बेपरवाह, अनासक्त और सरस थे तभी उन्होंने इतनी सुन्दर रचनाएँ संसार को दीं| गाँधीजी के व्यक्तित्व में भी कोमलता और कठोरता का अद्भुत संगम था | लेखक सोचता है कि हमारे देश में जो मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा? गुलामी, अशांति और विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए गाँधीजी जी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितयों मे भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह कर विकास कर सकता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न1-सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है ?

उत्तर- शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है| जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है|बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है | शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

प्रश्न२-आरग्वध (अमलतास) की तुलना शिरीष से क्यों नहीं की जा सकती ?

उत्तर- शिरीष के फूल भयंकर गरमी में खिलते हैं और आषाढ़ तक खिलते रहते हैं जबकि अमलतास का फूल केवल पन्द्रह-बीस दिनों के लिए खिलता है | उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते हैं और पेड़ फिर से ठूँठ का ठूँठ हो जाता है | अमलतास अल्पजीवी है | विपरीत परिस्थितियों को झेलता हुआ ऊष्ण वातावरण को हँसकर झेलता हुआ शिरीष दीर्घजीवी रहता है | यही कारण है कि शिरीष की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती |

प्रश्न३-शिरीष के फलों को राजनेताओं का रूपक क्यों दिया गया है?

उत्तर- शिरीष के फल उन बूढ़े, ढीठ और पुराने राजनेताओं के प्रतीक हैं जो अपनी कुर्सी नहीं छोड़ना चाहते | अपनी अधिकार-लिप्सा के लिए नए युवा नेताओं को आगे नहीं आने देते | शिरीष के नए फलों को जबरदस्ती पुराने फलों को धकियाना पड़ता है | राजनीति में भी नई युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को हराकर स्वयं सत्ता सँभाल लेती है |

प्रश्न४- काल देवता की मार से बचने का क्या उपाय बताया गया है?

उत्तर- काल देवता कि मार से बचने का अर्थ है– मृत्यु से बचना | इसका एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्य स्थिर न हो| गतिशील, परिवर्तनशील रहे | लेखक के अनुसार जिनकी चेतना सदा ऊर्ध्वमुखी (आध्यात्म की ओर) रहती है, वे टिक जाते हैं |

प्रश्न५- गाँधीजी और शिरीष की समानता प्रकट कीजिए |

उत्तर- जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है, अनासक्त रहकर अपने वातावरण से रस खींचकर सरस, कोमल बना रहता है, उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपनी आँखों के सामने आजादी के संग्राम में अन्याय, भेदभाव और हिंसा को झेला | उनके कोमल मन में एक ओर निरीह जनता के प्रति असीम करुणा जागी वहीं वे अन्यायी शासन के विरोध में डटकर खड़े हो गए |

गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर

गद्यांश संकेत- पाठ – शिरीष के फूल (पृष्ठ १४७)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कालिदास सौंदर्य के ....वह इशारा है |

(क) कालिदास की सौंदर्य–दृष्टि की क्या विशेषता थी ?

उत्तर-कालिदास की सौंदर्य–दृष्टि बहुत सूक्ष्म, अंतर्भेदी और संपूर्ण थी| वे केवल बाहरी रूप-रंग और आकार को ही नहीं देखते थे बल्कि अंतर्मन की सुंदरता के भी पारखी थे| कालिदास की सौंदर्य शारीरिक और मानसिक दोनों विशेषताओं से युक्त था |

(ख) अनासक्ति का क्या आशय है?

उत्तर- अनासक्ति का आशय है- व्यक्तिगत सुख-दुःख और राग-द्वेष से परे रहकर सौंदर्य के वास्तविक मर्म को जानना |

(ग) कालिदास, पंत और रवींद्रनाथ टैगोर में कौन सा गुण समान था?

महाकवि कालिदास, सुमित्रानंदन पंत और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर तीनों स्थिरप्रज्ञ और अनासक्त कवि थे | वे शिरीष के समान सरस और मस्त अवधूत थे |

(घ) रवींद्रनाथ राजोद्यान के सिंहद्वार के बारे में क्या संदेश देते हैं ?

राजोद्यान के बारे में रवींद्रनाथ कहते हैं राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही सुंदर और गगनचुम्बी क्यों ना हो, वह अंतिम पड़ाव नहीं है| उसका सौंदर्य किसी और उच्चतम सौंदर्य की ओर किया गया संकेत मात्र है कि असली सौंदर्य इसे पार करने के बाद है अत: राजोद्यान का सिंहद्वार हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है |

18श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा

डॉ० भीमराव अंबेडकर

सारांश – इस पाठ में लेखक ने जातिवाद के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को सभ्य समाज के लिए हानिकारक बताया है | जाति आधारित श्रम विभाजन को अस्वाभाविक और मानवता विरोधी बताया गया है। यह सामाजिक भेदभाव को बढ़ाता है। जातिप्रथा आधारित श्रम विभाजन में व्यक्ति की रुचि को महत्त्व नहीं दिया जाता फलस्वरूप विवशता के साथ अपनाए गए पेशे में कार्य-कुशलता नहीं आ पाती | लापरवाही से किए गए कार्य में गुणवत्ता नहीं आ पाती और आर्थिक विकास बुरी तरह प्रभावित होता है| आदर्श समाज की नींव समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर टिकी होती है। समाज के सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए सबको अपनी क्षमता को विकसित करने तथा रुचि के अनुरूप व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए| राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न1-डॉ० भीमराव अंबेडकर जातिप्रथा को श्रम-विभाजन का ही रूप क्यों नहीं मानते हैं ?

उत्तर –

१- क्योंकि यह विभाजन अस्वाभाविक है |
२- यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है |
३- व्यक्ति की क्षमताओं की उपेक्षा की जाती है |
४- व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है |
५- व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं देती |

प्रश्न२- दासता की व्यापक परिभाषा दीजिए |

उत्तर – दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है| सामाजिक दासता की स्थिति में कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने को विवश होना पड़ता है | अपनी इच्छा के विरुद्ध पैतृक पेशे अपनाने पड़ते हैं |

प्रश्न३- मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर रहती है ?

उत्तर –मनुष्य की क्षमता मुख्यत: तीन बातों पर निर्भर रहती है-

१- शारीरिक वंश परंपरा
२- सामाजिक उत्तराधिकार
३- मनुष्य के अपने प्रयत्न

लेखक का मत है कि शारीरिक वंश परंपरा तथा सामाजिक उत्तराधिकार किसी के वश में नहीं है परन्तु मनुष्य के अपने प्रयत्न उसके अपने वश में है | अत: मनुष्य की मुख्य क्षमता- उसके अपने प्रयत्नों को बढ़ावा मिलना चाहिए |

प्रश्न४- समता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है ?

जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार ही समता है। राजनेता के पास असंख्य लोग आते हैं, उसके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती सबकी सामाजिक पृष्ठभूमि क्षमताएँ, आवश्यकताएँ जान पाना उसके लिए संभव नहीं होता अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार के प्रयास करने चाहिए ।

<u>गद्यांश-आधारित अर्थग्रहण संबंधित प्रश्नोत्तर</u>

गद्यांश संकेत-पाठ श्रम विभाजन और जाति प्रथा (पृष्ठ १५३)
यह विडम्बना..बना देती है |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न १-श्रम बिभाजन किसे कहते हैं ?

उत्तर: श्रम विभाजन का अर्थ है– मानवोपयोगी कार्यों का वर्गीकरण करना| प्रत्येक कार्य को कुशलता से करने के लिए योग्यता के अनुसार विभिन्न कामों को आपस में बाँट लेना | कर्म और मानव-क्षमता पर आधारित यह विभाजन सभ्य समाज के लिए आवश्यक है |

प्रश्न २ - श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- श्रम विभाजन में क्षमता और कार्य-कुशलता के आधार पर काम का बँटवारा होता है, जबकि श्रमिक विभाजन में लोगों को जन्म के आधार पर बाँटकर पैतृक पेशे को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है| श्रम-विभाजन में व्यक्ति अपनी रुचि के अनुरूप व्यवसाय का चयन करता है | श्रमिक-विभाजन में व्यवसाय का चयन और व्यवसाय-परिवर्तन की भी अनुमति नहीं होती, जिससे समाज में ऊँच नीच का भेदभाव पैदा करता है, यह अस्वाभाविक विभाजन है |

प्रश्न ३ –लेखक ने किस बात को विडम्बना कहा है ?

उत्तर : लेखक कहते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो जातिवाद का समर्थन करते हैं और उसको सभ्य समाज के लिए उचित मानकर उसका पोषण करते हैं| यह बात आधुनिक सभ्य और लोकतान्त्रिक समाज के लिए विडम्बना है |

प्रश्न ४ : भारत में ऐसी कौन-सी व्यवस्था है जो पूरे विश्व में और कहीं नहीं है ?

उत्तर: लेखक के अनुसार जन्म के आधार पर किसी का पेशा तय कर देना, जीवनभर एक ही पेशे से बँधे रहना, जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव करना तथा बेरोजगारी तथा भुखमरी की स्थिति में भी पेशा बदलने की अनुमति न होना ऐसी व्यवस्था है जो विश्व में कहीं नहीं है |

www.studiestoday.com

अध्ययन सामग्री

कक्षा बारहवीं - वितान भाग-2

वितान भाग -२ पुस्तक में से प्रश्नपत्र में तीन प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँगे -

प्रश्न १२. अति लघूत्तरात्मक तीन प्रश्नों में से दो के उत्तर देने हैं| निर्धारित अंक - २ * २ = ४

प्रश्न १३. दो निबंधात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर| निर्धारित अंक – ५

प्रश्न १४. तीन लघूत्तरात्मक प्रश्नों में से दो प्रश्नों के उत्तर| निर्धारित अंक – ३ * २ = ६

Downloaded from www.studiestoday.com